त्रैमासिक पत्रिका 2018

अनमोल रिश्ता

प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय

गुड़वा, सीतागढ़, हजारीबाग (झारखंड)

तृतीय संस्करण

STUDENT EDITORIAL TEAM

EDITORIAL BOARD

TEACHING STAFF

From the Principal's Desk .....

Dear staff and students,

It is my pleasure to present you the 3rd edition of the E-Newsletter 'Anmol Rishta'of our college. The quarterly E-Newsletter of the college provides opportunities to develop and master writing skills of the students and staff. It is an excellent mode to share news and views on college activities. The current edition of the E-Newsletter presents creative writings, photos and experiences of the students and staff on various college activities conducted between June 2018 and October 2018.

As I begin my first college year as principal at PTEC, I am energized and deeply committed to making positive difference in the lives of the students. I believe we can accomplish this by setting high academic expectations for all students and providing supportive systems to assure they are met. Moreover, by focusing on a positive college culture, setting high standards for teachers and increased academic expectations for all students, it is our goal at PTEC that all students are prepared as the responsible citizens of the country.

In the similar tone, the famous poet, Rabindranath Tagore too has said, 'The highest education is that which does not merely give us information but makes our life in harmony with all existence.'PTEC being a Jesuit institution, here, we envision and strive for the holistic growth of all students to become persons of competence, conscience, compassion and commitment, and men and women for and with others.

Lastly, it is truly a privilege for me to be a part of a community where teachers and students care for each other and strive to build positive relationships that support academic and social growth. I wish and pray that God almighty continues to be gracious in the lives of all students and staff.

Sincerely,

Fr. (Dr.) Vincent Hansdak, S.J.

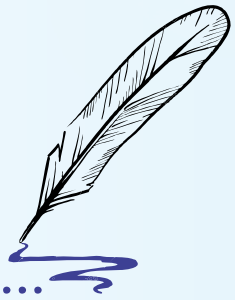

संपादक मंडल की कलम से .....

प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, गुड़वा सीतागढ़, हजारीबाग शिक्षक प्रशिक्षण का प्रतिष्ठित संस्थान है, जो विगत छः दशकों से प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में सर्वांगीण तथा गुणात्मक विकास के लिए प्रयत्नशील है।

भारत का भूभाग अपने में विविधता में एकता को समेटे हुए हैं। इस महाविद्यालय में भी शिक्षा, संस्कृति, सभ्यता, इतिहास, कला, दर्शन, विज्ञान आदि विषयों की अभिव्यक्ति होती रही है। विविध भाषाओं का शिक्षण तथा प्रशिक्षण यहाँ परिलक्षित है ।

परस्पर सहयोग, त्याग, सत्य, अहिंसा, राष्ट्र भक्ति जैसे गुणों का नैतिक महत्व, पूर्व की अपेक्षा आज अधिक माना जा रहा है । इन गुणों के विकास के लिए प्रशिक्षण अति महत्वपूर्ण है। किसी भी ज्ञान तथा पाठ्यक्रम को विद्यार्थियों तक पहुँचाने हेतु शिक्षक की मध्यस्थता आवश्यक होती है। साथ ही शिक्षा को सरल, सहज, सुगम, सुरूचि तथा सुग्राह्य बनाने में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण है ।

अनमोल रिश्ता पत्रिका का यह तृतीय संस्करण शिक्षा के विकास की भावना के साथ प्रशिक्षणार्थियों के सोच, उनके रचनात्मक कौशल तथा सृजनात्मक शक्ति से परिचय कराता है। अध्ययाताओं को सृजनात्मक तथा भावनात्मक सोच विकसित करने के लिए प्रेरित करता है।

महाविद्यालय की इस त्रैमासिक पत्रिका के प्रकाशन में प्राचार्य, व्याख्याताओं तथा प्रशिक्षणार्थियों के सराहनीय, अतुलनीय व प्रसंशनीय भूमिका के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

मुख्य संपादक
वाल्टर टोप्पो

सहायक संपादक
अनिल सोरेंग,
अल्का आरती नगेसिया ,
प्रमिला डुँगडुँग

शिक्षक सलाहकार
फा० श्याम किशोर टुडू ये०सं०
फा० डॉ० भिन्सेंट हाँसदा ये०सं०
सुमन मिंज, डोली लकड़ा,
नीरज त्रिपाठी,

महाविद्यालय परिचय

यह प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय हजारीबाग येसु समाज के द्वारा सन् 1958 ई॰ में एक अल्पसंख्यक ईसाई संस्था के रूप में स्थापित हुआ । इस महाविद्यालय के जन्मदाता फा० डी० मोल्डर हैं। संत इग्नासियुस लोयोला द्वारा सन् 1540 ई० में येसु समाज की स्थापना की गई। तब से ये धर्म समाज शिक्षा और समाज की सेवा के क्षेत्र में विश्वविख्यात है। हजारीबाग जेसुईट सोसाईटी ने समाज शिक्षा को ध्यान में रखते हुए महाविद्यालय की स्थापना की।

23 जुलाई 1958 ई० में बिहार के गवर्नर डॉ० जाकिर हुसैन जो एक मूल शिक्षा पद्धति के संस्थापक थे, जो इस संस्था का दर्शन किये एवं उनके अथक प्रयास द्वारा शिक्षा विभाग ने मान्यता दी। 15 प्रशिक्षणार्थियों के साथ शिक्षक शिक्षा संस्था जुलाई 1958 ई० में शुरू किया गया। इस समय इसके प्रचार्य फा० जे० डी० पेयरी एस॰ जे॰ थे । सन् 1960 ई० में फा० माईकल ईथर ने प्रशिक्षणार्थी, कर्मचारियों की समस्या को कल्याण विभाग तक पहुँचाया एवं महाविद्यालय में कृषि कार्य को जोर दिया।

फा० समरटन ने 1967 ई० में द्वितीय सत्र के लिए फा० पीटर का अनुकरण किया । उन्होंने दृढ़ संकल्प लिया और कहा कि जो भी शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे उन्हें गावों में जाकर सामाजिक चेतना के लिए काम करना है। फा० ओ० एस० ने शिक्षा के साथ– साथ कृषि कार्य पर बल दिया।

जनवरी सन् 1970 ई० में फा० याकुब तिर्की प्राचार्य बने और उन्होंने हॉली क्रॉस की धर्म बहनों को निमंत्रण दिया। ये धर्म बहनें अभ्यास मध्य विद्यालय में स्थानीय बच्चों को पढ़ाने का काम करती थीं। इसके बाद जुलाई सन् 1974 से 15 लड़कियों को भी इस महाविद्यालय में प्रशिक्षण मिलने लगा। इस समय प्राचार्य फा० माईकल ईथर दूसरी बार प्राचार्य बने। इसके बाद वे पटना में आयोजित राज्य शिक्षा संस्था कार्यक्रम में भाग लेने के लिए गए । वापस आने के बाद उन्होंने गणित विषय पर जोर दिया एवं कैथोलिक बच्चों को धर्म शिक्षा देने के लिए धार्मिक पुस्तकों का प्रबंध किया।

यह महाविद्यालय छात्रों और विशेषकर काथलिक लड़के लड़कियों को धार्मिक, बौद्धिक, नैतिक, शारीरिक, सांस्कृतिक एवं व्यवसायिक शिक्षा देकर उन्हें सर्वगुण संपन्न शिक्षक–शिक्षिका बनाने का उद्देश्य रखता है यहाँ इस तरह की शिक्षा दी जाती है कि प्रशिक्षणार्थी में शिक्षक–शिक्षिकाएँ जैसे मानवीय गुणों से सुसज्जित अपने सदाचरणों द्वारा विवेक और सुबुद्धि का प्रयोग कर समर्पित भाव से अपने ग्रामीण भाई–बहनों का सही नेतृत्व कर उन्हें विकासोन्मुख बनाने में सफल होंगे । वर्तमान में इस महाविद्यालय में अंग्रेजी शिक्षा के साथ – साथ तकनीकी शिक्षा पर भी विशेष जोर दिया जा रहा है। दोनों ही छात्रावास महिला / पुरूष में शिक्षणार्थी एक दूसरे को सहयोग देते हैं। यहाँ सहचर शिक्षा भी शिक्षाणार्थियों को एक साथ बढ़ने में मदद दे रही है जिसे फा० रोबर्ट सलैटरी एस॰ जे॰ ने शुरू किया था। स्टाफ गाईड के साथ प्रशिक्षणार्थियों को विभिन्न दलों में बाँटा गया है, जिसमें व्यक्तिगत और सामूहिक परामर्श दिया जाता है। यह प्रत्येक शुक्रवार को दो घंटियों में होती है ।

यह महाविद्यालय झारखंड अधिविद्य परिषद् राँची द्वारा संबंद्धता और एन० सी० टी० ई० द्वारा मान्यता प्राप्त है। वर्तमान में झारखंड अधिविद्य परिषद् का नया पाठ्यक्रम महाविद्यालय में चल रहा है इस महाविद्यालय का आदर्श वाक्य **"पर हिताय नरः नारी "** है।

अनुक्रमणिका

क्रम सं०	विषय	रचनाकार
1.	दिशा एवं निर्देशन का महत्त्व	अर्पण कुजूर
2.	दिशा – निर्देश	मनीष कुजूर
3.	Orientation	पुरूषोत्तम कुमार
4.	Welcome Day	प्रमिला खलखो
5.	प्यारी माँ	दीपक केरकेट्टा
6.	लोयोला दिवस	अनामिका बेक
7.	Independence Day	अनिल सोरेंग
8.	गाँधी जयंती	राजकुमार हँसदा
9.	कृषि एक अनुभव	वाल्टर टोप्पो
10.	Micro Teaching	रोहित किस्कु
11.	शिक्षण अभ्यास का अनुभव	रूपीना टुडू
12.	शिक्षक दिवस का अनुभव	अंजना रोस मिंज
13.	स्वर्गीय मैडम मोनिका कुजूर को श्रद्धांजली	फादर श्याम किशोर टुडू ये.सं.

दिशा और निर्देशन का महत्व

दिशा और निर्देशन का बड़ा ही महत्व है
विद्यार्थियों में शिक्षा का होना
सड़क में साईन बोर्ड का होना
भेड़ों के लिए चरवाहे का होना
खेल में रेफरी का होना
शिक्षा में दिशा और निर्देशन का होना
बड़ा ही महत्व है ।

कॉलेज में प्राचार्य का होना
अंधे के लिए एक सहारा का होना
कम्प्यूटर में युजर का होना
चौराहे में ट्रैफिक पुलिस का होना
शिक्षा में दिशा और निर्देशन का होना
बड़ा ही महत्व है।

बच्चों के लिए माँ – बाप का होना
क्लास में एक शिक्षक का होना
हवाई जहाज में पायलट का होना
गणित में सूत्र का होना
शिक्षा में दिशा और निर्देशन का होना
बड़ा ही महत्व है।

अर्पण कुजूर
प्रथम वर्ष
सत्र : 2018–2020

दिशा निर्देश

संघर्ष में आदमी अकेला होता है, सफलता में दुनिया उसके साथ होती है। जिस–जिस पर ये जंग हँसा है उसी ने इतिहास रचा है । दिनांक 3–7–2018 को हमलोग एक नयी उम्मीद, नयी सोच के साथ, हजारों व्यक्तियों के बीच संघर्ष कर पी० टी० ई० सी० गुड़वा, सीतागढ़, हजारीबाग पहुँचे । इस दिन कॉलेज में पहला दिन था। सबकी आँखों में उत्तेजना और खुशी स्पष्ट झलक रही थी । हमारा यह दिशा निर्देश क्लास दो दिनों तक चला। जिसमें हमारे मुख्य व्याख्याता फादर श्याम किशोर टुडू थे।

फादर श्याम किशोर टुडू ने हमें बहुत सारी अच्छी चीजों के बारे में शिक्षा दी। जिसमें से मैं कुछ मुख्य बातों को आपलोगों के सामने रखना चाहूँगा, जिन बातों ने मुझे बहुत प्रभावित किया है –

1. आत्म चेतना :– आत्म चेतना से आप अपने इस जीवन के मोड़ से क्या कामना करते हैं? जिसमें मेरा सोचना है, कि मैं अपने इस जीवन के मोड़ से यही कामना करता हूँ। मैं यहाँ जो शिक्षक बनने और सीखने आया हूँ उसे अच्छी तरह से करूँ और निभाऊँ ताकि अगली पीढ़ी का हमारे द्वारा जीवन बन सके ।

2. समय पाबंदी :– इसमें हमें यही दिशा निर्देश दिया गया कि हमारे पास जो सीमित समय उपलब्ध है उसमें हम कैसे अधिक कार्य सम्पन्न कर सकते हैं, जिसमें हमें कार्य करने के चार तरीके बताये गये हैं जो निम्नलिखित हैं –

I. IMPORTANT AND URGENT (महत्वपूर्ण तथा आवश्यक) इसमें यह महत्वपूर्ण है और जिसे छोड़ा नहीं जा सकता जैसे कक्षा के कार्यक्रम एवं इससे संबंधित क्रियाएँ, तथा दैनिक कक्षा की तैयारी ।

II. IMPORTANT BUT NOT URGENT (महत्वपूर्ण पर आवश्यक नहीं) विषय वस्तु से बाहर की पुस्तकें पढ़ना।

III. NOT IMPORTANT BUT URGENT (आवश्यक पर महत्वपूर्ण नहीं) जैसे रूटीन एस० एम० एस०, रूटीन फोन, रूटीन **WHATSAPP** देखना, **FACEBOOK** देखना ।

IV. NOT IMPORTANT NOT URGENT (न ही महत्वपूर्ण न ही आवश्यक) जैसे पागलपन की हद तक क्रिकेट देखना, नया रीलीज फिल्म देखने का शौक रखना, गपशप करना।

बहुत बार ऐसा होता है, हम समय पाबंदी नहीं कर पाते हैं,

जिसका प्रतिफल होता है तनाव। इसमें हमें यह भी दिशा निर्देश दिया गया कि हमारा दिन प्रतिदिन का कार्य के लिए हम समय निर्धारित कर लें जिससे जो हमारा कार्य है वह सुचारू रूप से कर सकें ।

3- STUDY SKILLS (स्वाध्यायन कौशल) इसमें हम स्वाध्यायन के लिए समय निर्धारित करें और अपने कार्य के प्रति समर्पित रहें। कक्षा में पढ़ाये जाने वाले विषयों को ध्यान से सुनें तथा नोट बनाये और हमें निरंतर पढ़ते रहना चाहिए। एक बार में 40 से 50 मिनट पढ़ें और बीच – बीच में 5 – 7 मिनट तक का ब्रेक लेते रहें। इन सभी बातों से मैं बहुत प्रभावित हुआ।

मैंने इन दो दिनों के **ORIENTATION CLASS** में जो कुछ सीखा वह अभी मेरे जीवन में बहुत काम आ रहा है। जिससे मेरा काम सरलता पूर्वक भी हो रहा है। एक और मुख्य बात जो मैंने इन दो दिनों के **ORIENTATION CLASS** में सीखा वो है – सूत्र के कदम तब तक दुहराते रहना है, जब तक पाठ समझ में आकर याद न हो जाए।

Manish Kujur
First Year
Session - 2018-20

ORIENTATION DAY

Starting college can cause much anxiety in the heart of a new college student because of all the unknown's "what should my major be? Will I make any friends? Whom do I ask if I have a question?" Student orientation programmes are designed to guide students in answering all of these questions. Prior to the beginning of classes, students are given an overview of the complete realm of college life, from Academics to Social Activities, through a period of days referred to as orientation.

Our two days orientation class was taken by Father Shyam, during orientation, students should be made aware of opportunities to be socially integrated into the college culture. In Primary Teachers Education College, two days of orientation we got an opportunity to get an Education. We all gathered together at auditorium for orientation day.

On first day, firstly we were told about our purpose and interests and by one person about our purpose and our advancement the basic aspect of life for the faith and new direction toward our education. We have to understand life values and our priorities. It is necessary to awaken our consciousness. Developing our skills and abilities by which we can succeed. After understanding everything, we all took the pledge to make continuous efforts together and work throughout the entire training period.

On the second day's class, we were told about time management, proper priorities and self study. Regarding time management, we were told that it is a process of successful time management by decorating the work plan. It increases the ability to get more work done in limited time available. Keeping special information on selecting the first one, which is important but not less important, study everyday from day one which becomes habit. We have learned to take advantage of opening the window of time.

Orientation programmes serve as a foundation for college success. Orientation is a much needed programme when planned correctly. Orientation is designed to answer question before they are asked and to provide solution before problems occur. By planning appropriately and using all campus, resources, and orientation should relieve anxieties and prepare the new students for success.

Courage doesn't always roar.
Sometime's the courage is the little voice at the end of the day that says I'll try again tomorrow.

Purushotam Kumar
First Year
Session 2018-20

Welcome Day

Welcome day was held on 07/07/2018 at Primary Teacher's Education College Sitagarha. The program started with the holy mass at 7:30. The main celebrant was Fr. Anil Aind. He gave us a beautiful sermon. Thomas Edison was defeated 500 times during his discovery but he kept on trying and at the end he succeeded. Similarly we have to be hard working. Always have positive thought that will make us to achieve our goal.

After the holy mass we had snacks. Our seniors brought us by welcoming to hall with all musical instruments. I felt very happy. There was a colourful programme performed by both years of trainees. The programme ended by a message of our principle.

The second part of welcome day's programme was volleyball match. The match was played by 1st and 2nd years of teacher trainees. It was very interesting match for us.

With this day made each one of us to be the part of training college students. From 1st day onwards it made us to bring out our qualities of our lives.

Pramila Xalxo
First Year
SESSION 2018-20

प्यारी माँ

एक माँ थी, वो अभी भी है जिसकी उम्र लगभग 60 साल है। उसका सारा जीवन अपने बच्चों के लिए समर्पित है। वह अपने बच्चों से बहुत प्यार करती है। वह अपने बच्चों से इतना प्यार करती है कि उनको हजारों बच्चे प्राप्त हुए। इतना ही नहीं उस माँ को और बच्चा पाने की इच्छा होती है। क्योंकि उस माँ को बच्चों का पालन पोषण करना, उनको अच्छी शिक्षा देना और एक अच्छा नागरिक बना कर देश की सेवा में समर्पित करना अच्छा लगता है। उसी में उसकी खुशी है, इसे ही वो अपनी सफलता समझती है। उसका परम धर्म भी यही है। वो माँ और कोई नहीं बल्कि वो माँ है प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय गुड़वा, सीतागढ़, हजारीबाग।

बच्चों के प्रति प्यार, स्नेह को देखकर खुदा ने उस प्यारी माँ से अत्यंत खुश हुए और वर्ष 2018 के जुलाई महीने के प्रथम सप्ताह में खुदा ने उन्हें 100 बच्चे दिए। वे बच्चे हैं हम सब प्रथम वर्ष के सभी प्रशिक्षणार्थी जिनका स्वागत उस माँ ने 07.07.2018 को रंगारंग कार्यक्रम के साथ किया। उस कार्यक्रम में नाच, गान, नाटक, कव्वाली आदि था। माँ ने अपने बच्चे बच्चियों का इस प्रकार धूमधाम से स्वागत किया कि माँ का प्राँगण बच्चों के किलकारियों से खिल गया और अभी प्राँगण भरा पूरा है। वो माँ बहुत खुश है। वो अभी दिन रात अपने बच्चों की सेवा में बस लगी हुई है। उस माँ के मन में बस यही है अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा देना। उनको अच्छी शिक्षा देकर एक आदर्श नागरिक बनाना है। इसलिए अपनी सेहत की परवाह किए बिना माँ अपने बच्चों की सेवा में दिन रात समर्पित है।

इस 60 साल की माँ का प्यार हम बच्चों के प्रति इतना है, कि शायद ही और कोई माँ होगी जिनके मन में अपने बच्चों के प्रति इतना प्यार होगा। इस माँ ने हम नन्हें बच्चों का प्यार–धूमधाम से स्वागत किया और हमें इतनी प्यार दे रही है, कि हम उसको प्यार का मूल्य कभी नहीं चुका सकते हैं। हम इस माँ के प्यार से कभी विचलित होना नहीं चाहते हैं और कभी अलग नहीं होंगे। इस माँ ने हमें अपनी आँचल से ढक लिया है। अपना प्यार शिक्षा, शिष्टाचार का ज्ञान आदि से हमें इतना मोह लिया है, कि हम माँ **PTEC** से कभी अलग नहीं हो सकते हैं।

मानवीय स्वाभाव है, कि हर बच्चा चाहता है कि अपना परिवार बसा कर अपने माता –पिता से अलग रहे। बुढ़ापे में उन्हें भूल जाते हैं, जिसने हमें हाथ पकड़ कर चलना सिखाया। इतना ही नहीं हमारे जीवन को सँवारने के लिए उसने अपना सारा जीवन न्योछावर कर दिया। पर हम ऐसा नहीं चाहते कि हमारे साथ भी ऐसा ही हो। यदि हम इस तरह का व्यवहार करतें हैं, तो हमारे जीवन की ये सबसे बड़ी गलती होगी। जो कि माफ करने योग्य भी नहीं होगा। इसलिए हमारी प्यारी माँ **PTEC** से हम कभी अलग होना नहीं चाहते हैं। इस माँ को हम प्यार के बदले प्यार देंगे। हमारी नहीं लेकिन माँ का जो लक्ष्य है उसे जरूर पूरा करेंगे। माँ के लक्ष्य को पूरा करना ही हमारा लक्ष्य होगा। तभी माँ का प्यार और परिश्रम सार्थक होगा। हमें माँ का प्यार और परिश्रम को सार्थक बनाना ही होगा।

दीपक केरकेट्टा
प्रथम वर्ष
सत्र– 2018–20

लोयोला दिवस

कभी –कभी जिंदगी के बड़े सवालों का जवाब बहुत छोटी सी चीज में मिल जाती है। वह चीज हमारे आस– पास होती है पर हमारा ध्यान उस पर नहीं जाता है।

आज 31 जुलाई संत इग्नासियुस लोयोला के आदर में पूरे भारत देश में लोग लोयोला दिवस के नाम पर त्योहार मनाते हैं। संत इग्नासियुस लोयोला महान संत घोषित किए गए और उन्होंने लोगों के लिए कई महान कार्य भी किए। संत इग्नासियुस लोयोला अपने जीवन में ईश्वर को पाना चाहते थे और प्यार पाना चाहते थे क्योंकि प्यार मानव जीवन के आध्यात्मिक विकास के लिए मूल आवश्यकता है।

इसी संदर्भ में संत इग्नासियुस लोयोला ने प्यार का परिचय देते हुए अंग्रेजी में एक कविता लिखी है।

God relates to us as a person in love

See God living in his creatures

In mother giving its existence

In animals, giving them consciousness

In man giving them intelligence

So he lives in me, giving me existence life,

Conscious, intelligence

More, he takes me his temple since

I have been created wearing the image and likeness of GOD.

इसी बीच हमारे महाविद्यालय में रंगारंग प्रोग्राम प्रस्तुत किया गया । जिसने सबके मन को मोह लिया और सभी लोग खुशी से झूम उठे। उस दिन प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय में सभी शिक्षक शिक्षिकाएँ, छात्र– छात्राएँ धूमधाम से संत इग्नासियुस लोयोला पर्व के अवसर पर हर्षोल्लास से पर्व मनाया। इतना ही नहीं पूरा दिन खुशी के मौके पर लोग एक दूसरे को हैप्पी फीस्ट डे कहकर एक दूसरे को विश किए। क्या नजारा था उस दिन मौसम भी कितना सुहावना था।

संत इग्नासियुस लोयोला के आदर में हमारे कॉलेज में सांस्कृतिक प्रोग्राम हुआ जिसमें हमने सबसे पहले ईश्वर को याद करते हुए वंदना नृत्य प्रस्तुत किया। कहा जाता है – कि किसी काम की शुरूआत ईश्वर का नाम लेकर करना चाहिए।

हमारा प्रोग्राम शुरू हो जाने के बाद हमारे बीच एक आसामी नृत्य प्रस्तुत किया गया जो मुझे बहुत अच्छा लगा क्योंकि यहाँ हम अपने ही संस्कृति , नाच, या गाना को केवल जानतें हैं, लेकिन जब प्रोग्राम होता है तो उस समय हम जैसे – आसामिया नृत्य हुआ तो हमें सुन्दर नाच देखने को मिला और उससे हमें नई चीजें सीखने को मिला।

उसके बाद संत इग्नासियुस लोयोला के जीवनी पर एक लघु नाटिका प्रस्तुत किया गया जो सबके हृदय को छू लिया। उससे हमें यह सीख मिली कि व्यक्ति के जीवन में प्रत्येक पग में कोई न कोई कठिनाई या समस्या आती रहेंगी, कहा जाता है – एक अच्छे व्यक्ति के जीवन के हर मोड़ पर चुनौती ही चुनौती खड़ी हो जाती है , पर संत इग्नासियुस लोयोला को देखिए उसने कभी ईश्वर का साथ नहीं छोड़ा। उसी प्रकार हमारे जीवन में भी कठिनाई आएगी पर हमें उसका सामना करना है। इतना ही नहीं हमारे फादरगण ने भी अपनी कलाओं को सबके सामने प्रस्तुत किया और सभों को खुश किया। इसके अलावा और भी जैसे – नागपुरी, फिल्मी, गुजराती आदि नाच प्रस्तुत किए गए वे बहुत ही मनमोहक और सुन्दर थे।

संत इग्नासियुस लोयोला दिवस के अवसर पर हमें स्वादिष्ट भोजन भी प्राप्त हुए जिसे हम खाकर बहुत प्रसन्न हुए और हमारे लिए यह दिन यादगार बन गया ।

अंत में हम लोगों ने उस खुशी को एक साथ मिलकर ग्रुप में डांस करके प्रकट किए, खूब मस्ती किए और आनन्द लिए।

अतः अंत में मैं यही कहना चाहूँगी कि जब भी बड़ा प्रोग्राम होता है, तो उस प्रोग्राम से हमें नए चीजों को जानने या सीखने का मौका मिलता है, इसलिए कोई भी प्रोग्राम होता है उसमें बढ़ चढ़कर भाग लें और खुशी को प्रकट कर अपने अन्दर के कलाओं को प्रस्तुत करें।

अनामिका बेक
द्वितीय वर्ष
सत्र : 2017–19

Independence Day

Independence Day is the most important day for the Indian citizens and mentioned in the history forever. India got freedom from the British rule on 15th August, 1947. Since then the whole India celebrates the Independence Day on 15th August.

Therefore we, the trainees, the staff of PTEC, the students and teachers of Primary Teacher's Education Practice Middle School Gurwa, Sitagarha Hazaribag also celebrated the feast of Independence Day. Today we started the celebration with the holy mass. Fr. Francis Indwar was the main celebrant of the holy mass. He told

us in his sermon that we are celebrating the feast of two mothers- Bharat Mata and Mother Mary. During the holy mass we prayed for the freedom fighters, the political leaders and the citizens of India. And also we prayed for the peace and harmony in our country. The holy mass was followed by the flag hoisting in the PTEC ground. The national flag was hoisted by Fr. Vincent Hansda, the principal of PTEC. Thereafter the national anthem was sung by all. After that speech was given in Hindi and English language about freedom fighters. There were some skits and dances too presented by the students of Primary Teacher's Education Practice Middle School, Gurwa in the football ground.

Today we remembered all our freedom fighters like- Chandra Shekhar Azad, Mangal Pandey, Tatya Tope, Bhagat Singh, Bal Gangadhar Tilak, Khudiram Bose, Sukh Deo and many more who fought, struggled hard and spent their whole lives. Our ancestors suffered severe persecution and oppression in the British rule. But they had a great zeal to the Independent country, therefore they jumped on the fire of oppression and persecution to extinguish them. Today our country is free from the British rule. But the question arises is it really independent? Yes it is independent but only and only from British rule and nothing else.

So what I experienced today is that being a teacher it is our responsibility and opportunity to literate the people to love and support each other and make our nation neat and clean, free from corruption and bondage. And it is an opportunity for the Indian citizens to be united and work for the betterment and development of our country. It is said that **'united we stand and divided we fall'**.

After the flag hoisting we went to **s.s.c.** ground for football match. It was very interesting football match between Jesuit brothers and PTEC trainees.

Anil Soreng
Second Year
Session 2017-19

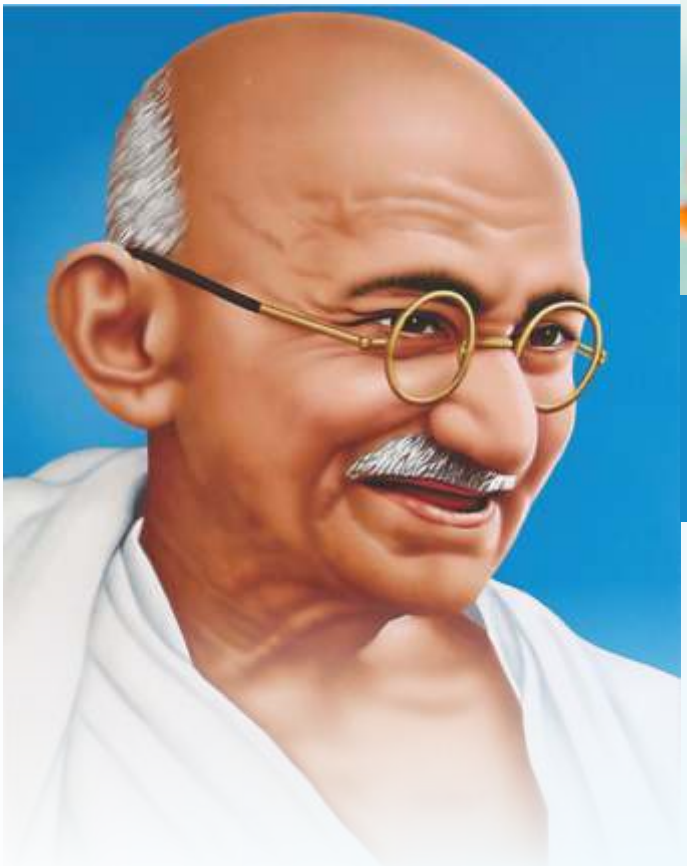

GANDHI JAYANTI

Primary Teacher's Education College, Gurwa, Sitagarha, Hazaribag celebrated the feast of Gandhi jayanti on 22nd September 2018 on the occasion of hundredth anniversary of Gandhi jayanti. The feast was started at 7:30 am by the lighting lamps and holy mass. The main celebrant of the holy mass was fr. Francis Lopez. He delivered an inspiring message on this occasion. He told about the life of Gandhiji and also he told how Gandhiji made India free.

After completing the holy mass the programme was started at 9 o'clock. Some skits were presented by the students of the college. The skit was related to the life of Gandhiji. The students presented the programme very nicely. We learned many things from the skits presented by the students that Gandhiji had told us to do and what not to do.

We have learned by the skit that Gandhiji was the person who changed India's fate. He wore white dhoti and rounded specs. The smile on his face resembles the pure snow flakes. He is called the father of the nation. He played an important role for the freedom of India. When he came from South Africa he saw the pitiful condition of the people. They had to suffer their outrage and lived like a bird trapped in a cage. The people cried with eyes filled with tears. The British followed the strategy of 'divide and rule' and they divided India into Hindu, Muslim and cast. Gandhiji was very sad when he saw this type of problems. He thought that he should do something for India to reunite. He started to struggle and launched many movements such as salt movement, Satyagraha etc. The people started using swords and gun but Gandhiji tried to stop the use of dynamite and went on strike to end this kind of fight. He followed peace and non-violence to achieve freedom from the British rule. After a long struggle India got freedom from the Brirish rule on 15th of August in 1947.

Ghandhiji correctly said these words, of course, would we have achieved freedom merely by the use of swords? The moral of the Gandhiji's life is that we should be the nature of non-violence and we should forgive the mistakes of others, this is the greatest

Religion. If we will do the mistake like others, there will be no difference between us and them.

After completing the skit comptetion the principal of the college Dr. Fr. Vincent Hansda gave an inspiring message to us and also told us to walk in the way of Gandhiji. Like the life of Gandhiji, I have also experienced that if we would like to defeat or overcome anybody, we can defeat or overcome not merely by swords and guns but with our good behaviour, good thoughts and good words.

At last the principal of the college announced the result of the skits and we were showing a great spirit to get the results. In skit competition 1st year boys stood in the first place, 2nd year boys stood in the second place, 1st year girls stood in the third place and 2nd year girls stood in the fourth place.

In this way we enjoyed the Gandhi Jayanti's programme and all the ministers of the college have conducted very good programme and completed the programme successfully and peacefully. The programme ended at 12:30 p.m.

Raj kumar Hansda
Second Year
Session : 2017-19

कृषि एक अनुभव

कृषि शब्द सुनते ही मेरे मन में कई कृषि गाने तथा कृषि से संबंधित कार्य याद आने लगते हैं। प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय मेरा प्रशिक्षण का दूसरा वर्ष है। अनेक अनुभवों के साथ कृषि के अंतर्गत रोपनी कार्य ने भी मेरे जीवन को छू लिया । कहा जाता है, कि एक शिक्षक को हर क्षेत्र में निपुण होना आवश्यक है, जिससे शिक्षक छात्रों के सार्वांगीण विकास कर सके । प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय में मैंने एक बड़ा अवसर पाया जहाँ पर एक साथ समूह में रोपनी कार्य किया।

वास्तव में रोपनी कार्य वर्षों से हमारे पूर्वज करते आ रहे हैं। हमें अतीत भी जानना अति आवश्क है। हमारा देश भारत कृषि प्रधान देश है। भारत में 50 प्रतिशत से अधिक लोग कृषि कार्य से जुड़े हैं। कृषि प्राचीन समय से लेकर अब तक बरकरार है। मनुष्य कृषि कार्य से अपनी आवश्यकताओं को पूरा करता था । समय बीतता गया अब कृषि को व्यवसायिक रूप में भी किया जा रहा है।

आधुनिक समय में कृषि पर अनेक सवाल उठ रहे हैं । विगत कुछ वर्षों से पलायन ने कई बड़े प्रश्न खड़े कर दिये हैं । गांव से कृषि छोड़ लोग शहरों में जीवन व्यतीत करना ज्यादा पसंद कर रहे हैं। और तेजी से पश्चिमी सभ्यता को धारण कर रहे हैं। जिस तेजी से कृषि को हमारे देश में अनदेखा किया जा रहा है, इससे आने वाले समय में हमारे लिए कई समस्याएँ खड़ी हो सकती हैं। आधुनिक मशीनों, बीज, उर्वरक आदि के प्रयोग से भूमि की उपजाऊ शक्ति घट रही है। मनुष्य धीरे–धीरे अपनी पहचान, संस्कृति, सभ्यता, अस्मिता को खोते जा रहा है। और सभ्य समाज समृद्ध समाज का सपना चूर होता जा रहा है ।

पिछले आँकड़े के मुताबिक मनुष्य अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए कृषि भूमि का दोहन किया है। कई कल–कारखानें लगाये गये । जिससे पूरे विश्व में खतरा मंडरा रहा है। ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्या होने से पूरे मानव जाति खतरे में है। अनेक अनुसंधान के बाद यह साबित हुआ कि वनों की कटाई, प्रदूषण, कृषि भूमि का दोहन से इस प्रकार की समस्याएँ पनप रही हैं।

मैं अपने आप को भाग्यशाली समझता हूँ, कि मैं प्राथमिक शिक्षक शिक्षा का प्रशिक्षाणार्थी हूँ। क्योंकि जीवन में इस प्रकार का अनुभव पाना काफी मायने रखता है। भविष्य के शिक्षक के रूप में हमें समाज के लिए मार्गदर्शक, प्रेरणास्रोत, कर्तव्यनिष्ट और अनुशासित होकर एक सुंदर समाज, शिक्षित समाज, तथा विकसित समाज बनाने का दृढ़ संकल्प लेना जरूरी है। रोपनी कार्य के द्वारा हमारे अन्नदाता किसान भाई – बहन, माता–पिता के द्वारा किये जाने वाले मेहनत, समर्पण, सेवा भाव को अपने जीवन में अनुभव करते हैं। एक शिक्षक का जीवन भी अन्नदाता किसान की तरह ही होता है जो छात्रों को सींचता, समय–समय पर गलत राहों से बचने की सलाह तथा छात्रों के भविष्य बनाने के लिए अपना जीवन समर्पित कर देता है। इन्हीं गुणों को अपनाकर शिक्षण करने से हमारे तथा हमारे पूर्वजों के सपनों को साकार कर पाने में कामयाब हो पाएँगे, इस रोपनी कार्य से मेरे जीवन में एक नया अध्याय जुड़ गया।

Walter Toppo
Second Year
Session 2017-2019

MICRO TEACHING

Micro Teaching is a teaching method through which we can improve our teaching quality and make it more attractive. Micro-teaching helps us to know the skills more deeply. We can learn things not only by reading but more than that by doing things.

In this teaching we make plans and accordingly we go about it and do things. We get much valuable feedback in this teaching and do re-teaching. There are mentioned six skills which we come across in this teaching such as **INTRODUCTION, EXPLANATION, BLACKBOARD WORK, QUESTIONING, STIMULOUS VARIATION AND CLOSURE.** Micro teaching started in 1961. In 1963, Allen Dweight from America named it MICRO TEACHING.

My name is Rohit kisku. In the beginning I had no knowledge about micro- teaching. It was not much known to me. Whatever I studied overflew my head. As I came to teach infront of my friends I had lots of fear inside me. I suddenly stopped my teaching and ran away from there. The thought coming to my mind was how would I teach in the school If I go for teaching practice. I somehow thought that this is not the time to run but rather to face what comes before me. I did lot of hard work required in the micro teaching. I started to make plans and to go accordingly. I came to know that micro - teaching has made me much courageous than before. As I went along the matters were very clear to me. What I liked the most in the micro teaching was the feedback. It brought out my weaknesses on which I worked hard. I completed rest of my micro teaching successfully.

A round of thanks to micro teaching for filling inside me is a feel of courage. It has really made me an independent person. Thanks to micro teaching so much....

At last I would like to add a statement.....

DO REMEMBER THAT
FEEDBACK MAKES A MAN PERFECT.
IF YOU WANT TO BE PERFECT YOU HAVE TO GO THROUGH SOME SORTS OF FEEDBACK IN YOUR LIFE BY ANYONE.

Rohit Kisku
Second Year
Session 2017-19

शिक्षण अभ्यास अनुभव

शिक्षण अभ्यास ये दो ऐसे शब्द हैं, जो शिक्षा देने या ग्रहण करने के तरीकों से हमें अवगत कराती है। शिक्षा एक योग्य एवं जिम्मेदार शिक्षक के द्वारा ही संभव है, चाहे वह प्राथमिक स्तर के शिक्षा की बात हो या उच्च स्तर के शिक्षा की बात हो । शिक्षक के द्वारा ही समाज को शिक्षित एवं सभ्य बनाया जा सकता है,जो एक विकसित देश के निर्माण के लिए अति आवश्यक है, अच्छे शिक्षक को विश्व की सबसे बड़ी संपदा भी माना जाता है।

मैं रूपीना टुडू प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय के प्रथम वर्ष की प्रशिक्षाणार्थी हूँ। हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी हमारे महाविद्यालय में हम सभी प्रशिक्षाणार्थियों को शिक्षण अभ्यास करने के लिए अवसर प्राप्त हुए। हम सभी का इन दिनों का बेसब्री से इंतजार किया था। अंततः शिक्षण अभ्यास के वे दिन पहुँच ही गये । मुझे भी शिक्षण अभ्यास के बहुतेरे अनुभव प्राप्त हुए ।

शिक्षण अभ्यास के पूर्व हमें सूक्ष्म शिक्षण का अभ्यास कराया गया था। शिक्षण अभ्यास को सफल बनाने के लिए सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास महत्वपूर्ण माना जाता है। शिक्षण अभ्यास के दौरान मैंने शिक्षण कौशलों को भली – भाँति अभ्यास करने के लिए हर संभव कोशिश की विभिन्न शिक्षण कौशलों जैसे – **प्रस्तावना, उद्देश्य कथन, स्पष्टीकरण, श्यामपटट कार्य, मूल्यांकन, कक्षा कार्य, गृह कार्य** का अभ्यास करते समय मुझे सकारात्मक के साथ – साथ नकारात्मक अनुभव भी प्राप्त हुए और मैं अपने शिक्षण अभ्यास के साथ अपने आप को ढाल पायी । वैसे ही मैंने सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास को बेहतर बनाने की कोशिश की। शिक्षण अभ्यास के द्वारा आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, शिक्षण समय प्रबंधन जैसे विशेषताओं को हम विकसित कर पाते हैं ये सभी गुण शिक्षक के व्यक्तित्व में समाहित होना अति आवश्यक है।

अंततः हम अपने अनुभवों से ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं, शिक्षक हमारे समाज तथा देश के सर्वमान्य संपदा हैं, जिसके बिना हम सभी अपने जीवन में सफल होने की परिकल्पना भी नहीं कर सकते हैं ।

रूपीना टुडू
प्रथम वर्ष
सत्र – 2018–20

शिक्षक दिवस का अनुभव

'देने में जो खुशी होती है वह लेने में कभी नहीं होती है'

स्वामी विवेकानंद

आजाद भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति एवं प्रसिद्ध शिक्षक डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने अपने जन्मदिवस 5 सितंबर को पूरे राष्ट्र के लिए सुपुर्द कर दिया। जिसे हम शिक्षक दिवस के रूप में मनाते हैं। हमारे महाविद्यालय में भी इस पुनीत दिवस को पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। 5 सितंबर का दिन बड़ा निराला था। मैं और मेरे सहपाठियों के चेहरे पर खुशी की आभा झलक रही थी। हम सभी अपने शिक्षकों को शिक्षक दिवस की ढेर सारी बधाईयाँ एवं शुभकामनाएँ देने के लिए उत्सुक थे।

इसका शुभारंभ प्रात 7 बजे पवित्र मिस्सा पूजा से हुई जिसके मूख्य अनुष्ठाता हमारे महाविद्यालय के प्राचार्य महोदय फा० भिन्सेंट हाँसदा थे। उन्होंने अपने उपदेश में डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन एवं संत मदर तेरेसा के जीवन गाथा के कुछ महत्वपूर्ण बातों का जिक्र किया कि लोगों ने संत मदर तेरेसा को उनके हमेशा खुश रहने का रहस्य पूछा गया था।

WHAT IS THE SECRET OF YOUR HAPPINESS ?

संत मदर तेरेसा ने अपनी सेवा गरीबों और जरूरतमंदो को देने में बिताई । पवित्र मिस्सा पूजा में हमने विश्व भर के शिक्षकों विशेषकर हमारे महाविद्यालय के प्राचार्य महोदय एवं सभी शिक्षक वृंद के अनमोल जीवन एवं त्याग पूर्ण सेवा के लिए पिता ईश्वर को धन्यवाद दिया।

इसके पश्चात शिक्षकों के आदर एवं सम्मान में रंगारग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। जो बहुत आकर्षक एवं आनंददायक था। इसी दौरान हमने हमारे शिक्षकों के सद्गुणों को रचनात्मक ढंग से प्रस्तुत किया । यह मेरे लिए नयी चीज थी। सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंत में हमारे महाविद्यालय के व्याख्याता मैम डोली लकड़ा ने वर्तमान में शिक्षकों के विभिन्न चुनौतियों के बारे हमें बताया जिससे मुझे अपने अध्ययन में मेहनती एवं परिश्रमी बनने की प्रेरणा मिली।

फूल रूपी बगिया के माली हैं आप
जिसमें रंग भरते हैं आप
पुस्तकीय ज्ञान ही नहीं वरन्
पूरी लगन एवं मेहनत् से
जीवन सँवारते हैं आप।

Anjana Rose Minj
Second Year
Session 2017-19

स्वर्गीय मैडम मोनिका कुजूर को श्रद्धांजली

स्वर्गीय मैडम मोनिका कुजूर का जन्म 11 मार्च, सन् 1953 ई० को राँची जिला के मांडर पल्ली के बसगी गाँव में हुआ था। आठ भाई–बहनों में वे दूसरे स्थान में थी । अपनी पढ़ाई पूरी कर उनकी नियुक्ति विज्ञान शिक्षिका के रूप में जुलाई 1979 ई० शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, गुड़वा, सीतागढ़ में हुई। सन् 1985 ई० में उनकी शादी माननीय दीपक गोम्स से हुई जो सेवानिवृत होने तक संत जेवियर स्कूल, हजारीबाग के शिक्षक रहे हैं ।

स्वर्गीय मैडम मोनिका कुजूर जुलाई 1979 से मई 2013 ई० तक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय ,सीतागढ़ में विज्ञान शिक्षक के रूप में सेवारत रहीं। विज्ञान शिक्षिका के रूप में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते हुए वे महाविद्यालय के उत्तरोत्तर विकास के लिए निरंतर प्रयास करती रही। उनके व्यक्तित्व का परिणाम था कि सन् 2008 ई० में येसु समाजी शासी निकाय ने विज्ञान शिक्षिका होने के साथ–साथ, उन्हें महाविद्यालय का प्राचार्य नियुक्त किया जिस पद से वे 2013 ई० में सेवानिवृत हुई। उस दशक के राजनीतिक उठा पटक, शैक्षणिक उतार–चढ़ाव के बीच मैडम मोनिका ने एक कुशल नाविक की भाँति महाविद्यालय को एक दिशा दी। प्रशिक्षुओं के बीच वह एक कुशल कुम्हार की भाँति एक हाथ से सहारा तथा दूसरे हाथ से बर्तन ठोंककर नया रूप देने वाले व्यक्तित्व के रूप में जानी जाती थी । सेवानिवृत होने के बाद भी वह महाविद्यालय से जुड़ी रहीं तथा उसके हर कार्यक्रम में सुरूचिपूर्ण योगदान देती रहीं। 19 जून 2018 ई० को भी वह हाल–चाल जानने महाविद्यालय आयी थीं । शाम के रात्रि भोजन के समय ही उन्हें अपने भाई के संत बरनाबस अस्पताल राँची में दाखिल करने का समाचार फोन पर मिला। उन्होंने उसी समय अगले सुबह राँची जाने की योजना बनाई । रात्रि भोजन के बाद उन्होंने अच्छा न लगने की बात कही । उन्हें सोफा में लिटाया गया। वहीं वे बेहोश हो गयी । उन्हें ईलाज हेतू राँची ले जाने का प्रबंध किया गया। रास्ते में ही उनके प्राण पखेरू भगवान को प्यारे हो गये।

उनके अचानक देहांत ने उन सबों को किंकर्तव्यविमूढ़ रख दिया, जो इनको अलग–अलग रूप में जानते थे। अपने जीवन काल में वे प्रशिक्षुओं को कुशल शिक्षक बनने के गुर सिखाती रही। जाते–जाते भी वे हम सबों को एक पाठ पढ़ा गयी कि ईश्वर की इच्छा के सामने किसी की नहीं चलती हम सबों को नतमस्तक होना पड़ता है। पूजन समारोह के समय सभी हजारीबाग के येसु समाजी ने मैडम मोनिका के रूप में संस्थान को मिले दान के लिए पिता ईश्वर को धन्यवाद दिया। शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय के शिक्षकवृंद, सभी पूर्व तथा वर्तमान प्रशिक्षुओं ने उनके अमूल्य योगदान के लिए श्रद्धासुमन अर्पित किये। सभी ने नतमस्तक होकर प्रार्थना की कि पिता ईश्वर उन्हें उनके भलमनसाहत के लिए स्वर्ग राज्य में जगह दें, और उन्हें अनंत शांति के पुरस्कार से नवाजे।

सभी ने विशेष रूप से उनके भाई विलयम कुजूर की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की जिनका देहांत भी उसी दिन संत बरनाबस अस्पताल, राँची में करीब 9 बजे दिन को हुआ जिनको देखने मैडम मोनिका जाने वाली थी ।

सभी उनके परिवार के सदस्यों, विशेषकर उनके पति दीपक गोम्स, उनके बेटे दिवाकर गोम्स तथा सभी नजदीकी परिवार के सदस्यों के लिए प्रार्थना की कि इस कठिन घड़ी में वे पिता परमेश्वर की सांत्वाना तथा दिलासा का अनुभव कर सकें तथा इस सच्चाई को स्वीकार कर सकें।

सभी ने अश्रुपूर्ण आँखों से मैडम मोनिका को सीतागढ़ पल्ली के कब्रस्थान में विदाई दी ।

फादर श्याम किशोर टुडू ये०सं०

शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय परिवार सीतागढ़।

शिक्षिका और विद्यार्थी

एक बार क्लास में मैडम ने बच्चों से एक सवाल पूछा :
मैडम : तुम सब में से सबसे बहादुर कौन है बच्चों ?

मैडम का सवाल सुनकर सारे बच्चों ने हाथ उठा दिये, यह देखकर मैडम ने एक और सवाल पूछा ।

मैडम : अच्छा बताओ, अगर तुम्हारे स्कूल के सामने कोई बम रख दे तो तुम क्या करोगे? सवाल सुनकर छात्र ने हाथ उठाया और बोला ।

छात्र : मैडम जी एक, दो मिनट देखेंगे अगर कोई ले जाता है तो ठीक है,
नहीं तो स्टाफ रूम में रख देंगे।

Anil soreng
Second Year
Session -2017-2019

PHOTO GALLERY 2018-2019

Second Year Group Photo (2017-2019)

First Year Group Photo (2017-2019)

PHOTO GALLERY 2018-2019

PTEC Students Photo

PTEC Ministers Photo

COLLEGE ACTIVITIES 2018

Gandhi Jayanti

Gandhi Jayanti

Independence Day 2018

Independence Day 2018

Teacher's Day 2018

Teacher's Day 2018

Teaching Practice 2018

Teaching Practice 2018

COLLEGE ACTIVITIES 2018

Loyola Day 31 July 2018

Loyola Day 31 July 2018

Paddy Transplantation

Welcome Day

Paddy Harvesting

Paddy Harvesting

Loyola Day 31 July 2018

Teaching Practice Dhawaiya

New College Building Under Construction

प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय

गुड़वा, सीतागढ़, हजारीबाग (झारखंड)